Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

अंक 6

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

14 अप्रैल 2016 ई   6 रजब 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के ज़माने से हमारे इस समय तक सभी इस्लामी फिर्कों की इस बात पर सहमति है कि इस्लाम की सच्चाई यही है कि जैसा कि एक व्यक्ति ख़ुदा तआला को ही ला शरीक समझता और उसकी तौहीद और अस्तित्व और वहदानियत पर विश्वास करता है वैसा ही इसके लिए आवश्यक है कि आँ हज़रत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत पर ईमान लाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

“चूंकि इस फित्नों से भरे ज़माने में मुसलमानों में ऐसे लोग भी पैदा हो गए हैं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाना और आप का पालन करना मुक्ति के लिए जरूरी नहीं समझते और केवल ख़ुदा तआला को ही अकेला और बिना साझीदार के मानना जन्नत में दाख़िल होने करने के लिए पर्याप्त विचार करते हैं और कुछ ऐसे हैं कि केवल झूठ और अत्याचार के रूप में या अपनी ग़लतफहमी से मेरे पर तरह तरह के अलैतिक एतराज़ करते हैं जिन ऐतराज़ों से कुछ का मतलब तो यह मालूम होता है कि ताकि लोगों को इस सिलसिले से निराश करें। और कुछ ऐसे भी हैं कि धर्म के रहस्यों को समझने की उनकी तबीयतें असमर्थ हैं और उनकी तबीयत में बुराई नहीं मगर समझदारी भी नहीं और न विस्तृत ज्ञान है जो वे ख़ुद हकीकत को समझ सकें। इसलिए मैंने उचित समझा के इस समाप्ति के करीब में उन सभी के संदेह निवारण किया जाए।

कुछ अवश्य न था कि मैं उनके संदेह को दूर करने के लिए ध्यान करता है। क्योंकि मेरी बहुत सी किताबों के विविध स्थानों में इन बेहूदा आपत्तियों का जवाब दिया गया है लेकिन इन दिनों में **अब्दुल हकीम खान** नामक एक व्यक्ति जो पटियाला राज्य में सहायक सर्जन है जो पहले इससे हमारे बैअत के सिलसिला में दाख़िल था मगर कम मुलाकात और धार्मिक संगत में कमी के कारण तथ्यों से महज़ अनजान और वंचित था और अंहकार और अज्ञानता और गर्व और बदज़नी (कुधारणा) की बीमारी से पीड़ित था अपनी बद किस्मती से मुर्तद होकर इस सिलसिले का दुश्मन हो गया है और जहाँ तक इस से हो सका ख़ुदा के नूर को विलुप्त करने के लिए अपनी जाहिलाना लेखों में ज़हरीली फूंकों से काम रहा है ताकि इस शमा को बुझा दे जो ख़ुदा के हाथ से रौशन है इसलिए उचित समझा गया कि संक्षिप्त रूप से कुछ इस की आपत्तियों का जवाब लिख दिया जाए जो जनता को सूचित करने के लिए उचित जवाब हैं क्योंकि जनता में यह बात लापरवाही और दुनिया में व्यस्त होने के कारण मुश्किल है कि सभी मेरी पुस्तकें प्राप्त करके उनमें से यह जवाब पता कर लें।

अत: पहले वे बात लिखने के योग्य है जो एक अब्दुल हकीम ख़ान हमारी जमाअत से अलग हुआ है और वह यह है कि उसका यह विश्वास है कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की ज़रूरत नहीं बल्कि हर एक जो ख़ुदा को ही ला शरीक जानता है (यद्यपि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इन्कार करने वाला है) वह उद्धार पाएगा। इससे ज़ाहिर है कि उसने निकट एक व्यक्ति इस्लाम से मुर्तद होकर भी बचाया जा सकता है और अपने धर्म को त्यागने की उसे सज़ा देना ग़लत है। जैसे हाल में ही जो एक व्यक्ति अब्दुल गफ़ूर नाम मुर्तद होकर आर्य समाज में प्रवेश किया और धर्मपाल नाम रखा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान और विरोद्ध में दिन रात प्रतिबद्ध है वह भी अब्दुल हकीम खान के निकट सीधा जन्नत में जाएगा। क्योंकि आर्य लोग मूर्ति पूजा से अलग हैं। मगर हर एक बुद्धिमान समझ सकता है कि ऐसे विश्वास की दृष्टि से अंबिया अलैहिमुस्सलाम का भेजा जाना सिर्फ़ बेहूदा और लग़्व काम ठहरेगा। क्योंकि जब एक व्यक्ति अंबिया अलैहिमुस्सलाम का झुठलाने वाला और दुश्मन होकर भी ख़ुदा को एक जानने से मुक्ति पा सकता है तो इस मामले में मानो नबी केवल व्यर्थ रूप में दुनिया में भेजे गए। * वरना उनके बिना भी काम चल सकता था। और अपने अस्तित्व की कोई बड़ी भारी जरूरत न थी। और अगर यह सच था कि केवल ख़ुदा को ही ला शरीक कहना ही काफी है मानो यह भी एक शिर्क की किस्म है कि ला इलाहा इल्लल्लाह के साथ मुहम्मद रसूसुल्लाह अनिवार्य रूप से ज़रूरी मिलाया गया और वास्तव में इस विचार के लोग मुहम्मद रसूलल्लाह कहना शिर्क समझते हैं और ख़ुदा तआला की पूर्ण तौहीद इसी में कल्पना करते हैं कि उसके साथ किसी का नाम न मिलाया जाए और उनके निकट इस्लाम से बाहर होना मुक्ति में रुकावट नहीं। और अगर जैसे एक ही दिन में सभी मुसलमान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी से इनकार करके गुमराह दार्शनिकों की तरह केवल तौहीद को काफी समझें और अपने आप को कुरआन और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से बेनियाज़ विचार कर लें और इन्कार करने वाले हो जाएं तो उनके पास यह सब लोग बावजूद मुर्तद होने के मुक्ति पा करेंगे और बेशक आसमान में प्रवेश करेंगे।

मगर यह बात किसी कम बुद्धि वाले पर भी छिपी नहीं कि सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के ज़माने से हमारे इस समय तक सभी इस्लामी फिर्कों की इस बात पर सहमति है कि इस्लाम की सच्चाई यही है कि जैसा कि एक व्यक्ति ख़ुदा तआला को ही ला शरीक समझता और उसकी तौहीद और अस्तित्व और वहदानियत पर विश्वास करता है वैसा ही इसके लिए आवश्यक है कि आँ हज़रत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत पर ईमान लाए। और जो कुछ कुरआन शरीफ में सूचीबद्ध तथा वर्णित है सब पर ईमान रखे। यही वह बात है जो शुरुआत से मुसलमानों के दिमागों में रख दी है और इसी पर दृढ़ विश्वास रखने की वजह से सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम ने अपनी जानें दीं। और कई सच्चे मुसलमान काफिरों के हाथ में नबवी ज़माना में गिरफ्तार हो गए थे उनको बार बार डराया गया था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इनकार कर दो तो तुम हमारे हाथ से रिहाई पाओगे। लेकिन उन्होंने इनकार नहीं किया और इसी रास्ते में जान दी। ये बातें इस्लाम की घटनाओं में ऐसी प्रसिद्ध हैं कि जो व्यक्ति एक कम जानकारी भी इस्लामी इतिहास से रखता होगा उसे हमारे इस बयान से इनकार नहीं होगा।

हाशिए

* यदि यह बात सच है कि जो लोग अंबिया अलैहिमुस्सलाम का इन्कार करने वाले और उनके दुश्मन हैं केवल अपनी काल्पनिक तौहीद से मुक्ति पा जाएंगे तो बजाय इन काफिरों को क़यामत में कोई अज़ाब हो नबी ख़ुद एक प्रकार के अज़ाब में पीड़ित हो जाएंगे। जबकि वह अपने कठोर दुश्मनों और मकज़बों और अपमान करने वालों को जन्नतों के सिंहासन पर बैठे देखेंगे और अपनी तरह के प्रत्येक प्रकार की नाज़ तथा नेअमत में उनको पाएंगे और संभव है कि उस समय भी वे ठट्ठा करके नबियों को कहें कि तुम्हारी तक़ज़ीब और अपमान ने हमारा क्या बिगाड़ा। तब जन्नत में रहना नबियों पर कड़वा हो जाएगा। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 111-114)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद का इल्हाम

बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे।

पहली बार पूरा होने की चमत्कारी घटना

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने ख़ुत्बा जुम्अ: 15 जुलाई 1966 में फरमाया:

हज़रत मसीह मौऊद ने 1868 ई में फरमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा बताया है कि:

" बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूढेंगे।"

उस वक्त आप भी कोई न जानता था, कादियान भी कोई न जानता था, जमाअत अहमदिया को भी कोई नहीं जानता था, न कहा जा सकता है कि ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद को भी कोई न जानते थे क्योंकि उस समय अल्लाह के हुक्म से जमाअत का क़याम नहीं किया गया था और बैअत भी शुरू नहीं हुई थी। उस समय अल्लाह तआला ने यह भविष्यवाणी की और लगभग सौ साल तक मुखालिफ़ को मौका दिया कि जितना चाहो मज़ाक कर लो, ठट्ठा कर लो, अपहास कर लो, ताने दे लो। यह कलाम हमारे (अज़ीज़ ख़ुदा का) कलाम है, जो एक दिन पूरा होकर रहेगा, इस साल अल्लाह तआला ने अपने फज़्ल से वह सामान पैदा कर दिए (दो कम सौ साल के बाद) जब इस समय एक नया देश बनाया गया। फिर अल्लाह तआला की तकदीर ने इस देश को आज़ादी दिलाई, फिर अल्लाह तआला की तकदीर के अनुसार जब इस देश की अपनी सरकार बनी, तो उसका प्रधान और उसका एक्टिंग (Acting) गवर्नर जनरल उस आदमी को नियुक्त किया गया जो नियुक्ति के दिन से पहले जमाअत अहमदिया गेम्बिया के प्रैज़िडेंट था। इस तरह जमाअत अहमदिया के राष्ट्रपति को गवर्नर जनरल बना दिया गया। फिर उन्हें हमारे (मुरब्बी) ने ध्यान दिलाया कि अल्लाह तआला की एक ख़ुश ख़बरी है कि " बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे ।" तुम ख़ुश नसीब इंसान हो कि दुनिया की तारीख़ में तुम्हें पहली बार यह मौका मिल रहा है कि हज़रत मसीह मौऊद कपड़े से तुम बरकत प्राप्त कर सको, लेकिन यह कोई मामूली बात नहीं। इसलिए इससे पहले कि तुम इस बारे में समय के ख़लीफा को अपनी दरख़वास्त (आवेदन) भिजवाओ चालीस दिन तक चिल्ला करो, यानी विशेष रूप से दुआएं करो, इस प्रकार के चिल्ला नहीं जो सूफिया और फकीर क्या करते हैं चालीस दिन तक विशेष रूप से तहज्जुद में दुआ करो कि ख़ुदा तआला तुम्हें इस बात का पात्र बनाए कि हज़रत मसीह मौऊद के कपड़े का एक टुकड़ा तुम्हें मिले।

उन्होंने दुआ शुरू की और फिर मुझे पत्र लिखा कि में दुआओं में संलग्न हूँ और अल्लाह तआला के सामने गिड़ गिड़ा रहा हूँ कि मैं एक भारी जिम्मेदारी ले रहा हूँ, सिर्फ सम्मान नहीं कर रहा, सिर्फ तबर्रुक हासिल नहीं कर रहा, बल्कि बड़ी भारी ज़िम्मेदारी भी ले रहा हूँ एक आदमी जो हज़ारों मील दूर रहता है न कभी रबवा आया, न ही अहमदियत की तारीख़ से पूरी तरह परिचित, उसके दिल में हज़रत मसीह मौऊद के तबर्रुक के महत्त्व जब तक पूरी तरह बिठा न दी जाती मेरे नज़दीक उन्हें तबर्रुक भिजवाना सही नहीं था। इसलिए मैंने उन्हें एक लंबा ख़त लिखा और उन्हें यही बिंदु समझाया कि तुम हज़रत मसीह मौऊद का तबर्रुक मांग रहे हो, इस में बरकत भी बड़ी मगर यह भी नहीं भूलना कि इसकी क़ीमत इतनी है कि सारी दुनिया के सोने और सारी दुनिया के चांदी और सारी दुनिया के हीरे और रत्न भी अगर इस के मुकाबले में रखे जाएँ तो उनकी वह क़ीमत नहीं जो हज़रत मसीह मौऊद के कपड़े के एक टुकड़ा की क़ीमत है। इसलिए तुम एक बड़ी ज़िम्मेदारी ले रहे हो। मानसिक रूप से रूहानी और नैतिक रूप से अपने आप को इस के योग्य बनाओ।

यह लेख था इस ख़त का जो मैंने उन्हें लिखवाया और उन से इंतजार करवाया ताकि जब उनकी यह रूहानी प्यास और भड़के और उन के दिल में ज़िम्मेदारी की पूरी संवेदनशील पैदा हो जाए तब वह तबर्रुक उन्हें भेजा जाए।

पंद्रह बीस दिन हुए वह तबर्रुक उन्हें भेजा गया और मुझे अब घोड़ा गली में उनकी तार मिली है कि वह तबर्रुक मुझे मिल गया है, दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे इस से विधिवत लाभ उठाने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

(अल्फ़ज़्ल 17 अगस्त 66 ई)

फिर हुज़ूर ने ख़ुत्बा जुम्आ 16 सितंबर 1966 ई में फरमाया

हज़रत मसीह मौऊद को 1868 में इल्हाम हुआ कि:

" बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे।"

इस पर जब एक लंबा समय बीत गया और अल्लाह तआला ने उसके पूरे होने के सामान न किए तो दुश्मन ने हर तरह से उसका मज़ाक उड़ाया और उपहास किया और ठट्ठा से बातें कीं। तब लगभग एक सौ साल बाद अल्लाह तआला ने ऐसे माल पैदा कर दिए कि जाम्बिया जो पश्चिमी अफ्रीका का एक देश है उसे आज़ाद कराया और फिर वहाँ एक अहमदी श्री सनघेटे साहब को जो अपनी पार्टी के सदर भी थे गवर्नर जनरल बना दिया। फिर उन्होंने मुझ से हज़रत मसीह मौऊद का कपड़ा बतौर तबर्रुक मांगा और लिखा कि मैंने बड़ी दुआएं हैं और बड़ी विनम्रता और विनय के साथ अपने रब्ब के सामने झुका हूं कि वह मुझे हज़रत मसीह मौऊद के कपड़े से बरकत प्राप्त करने की तौफ़ीक़ अता करे। इसलिए ख़ुदा तआला ने ऐसे सामान पैदा कर दिए कि जिन्हें देखकर हैरत होती है। पहले मुझे घबराहट थी कि उनकी मांग के बाद उन्हें कपड़ा मिलने में बहुत अधिक देर हो रही है लेकिन अल्लाह तआला की इच्छा कुछ और ही थी। आख़िर वह कपड़ा उन्हें यहां से रवाना कर दिया गया और वह कपड़ा उन्हें जिस दिन सुबह डाक के द्वारा मिला उसी रात को बी.बी.सी से यह घोषणा हुई कि उन्हें ऐक्टिंग गवर्नर जनरल से गवर्नर जनरल बना दिया गया है।

इसका नतीजा यह हुआ कि उनके दिल में खुदा तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद के लिए बहुत प्यार पैदा हो गया। जिस प्यार का इज़हार उन्होंने पहले एक तार और फिर एक ख़त के माध्यम से किया। फिर अल्लाह तआला ने उन पर एक और सांसारिक बरकत दी। आज ही उनका तार मिला है जिसमें उन्होंने बताया कि मुझे ब्रिटेन की हुकूमत ने KNIGHT-HOOD (नाइट हुड) प्रदान किया है। मेरी तरफ से जमाअत को मुबारक बाद पहुंचा दें।

(अल्फज़ल 5 अक्तूबर 1966 ई)

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

वफ़ा के गीत गाता हूँ

नहीं नफरत किसी से वफ़ा के गीत गाता हूँ।
में गाली के मुकाबिल पर दुआएं देता जाता हूँ।।

अजब है आँख का पानी यह तकदीरें बदतला है।
जहां मुश्किल हो कोई यह नुस्ख़ा आज़माता हूँ।।

मरे सिर पर है शफकत का अनोखा साइबाँ ऐसा।
तूफाने हवादिस मैं हमेशा मुस्कुराता हूँ।।

अंधेरे से न घबराना अंधेरे छुट ही जाएंगे।
में राहों में वफ़ा के दीप ऐ हमदम जलाता हूं।।

नहीं मुमकिन जुदा हो फूल से खुशबू किसी सूरत।
जवां हैं वलवले कोई बुलाता है 'मैं जाता हूँ।।

कोई कह दे सबा से ही उन्हें जाकर मना लाए।
फूलों की जगह राहों में पलकें बिछाता हूं।।

तुम्हारी याद के मोती मेरी पलकों पर लरज़ा हैं।
बड़ी अनमूल दौलत है इसे सब से छुपाता हूँ।।

(अनवर नदीम अल्वी)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्ब: जुमअ:

शैतान इंसान का अनादि काल से दुश्मन है और हमेशा रहेगा। शैतान की यह दुश्मनी कोई खुली दुश्मनी नहीं है कि सामने आकर लड़ रहा है बल्कि वह विभिन्न तरीकों तथा बहानों से धोखे तथा छल से सांसारिक लालचों के माध्यम से आदमी के अहंकारों को उभारते हुए इंसानों को नेकियों से दूर ले जाता है और बुराइयों के समीप करता है। लेकिन साथ ही अल्लाह तआला ने अपने नबियों को भेजने के निज़ाम को जारी करके आदमी को नेकियों के रास्ते भी बताए। उन्हें सुधार के तरीके भी बताए उन्हें अपनी दुनिया और आख़िरत संवारने के माध्यम भी बताए।

यह बात भी हमें याद रखनी चाहिए कि शैतान का हमला एक दम नहीं होता। वह धीरे धीरे हमला करता है। कोई छोटी सी बुराई इंसान के दिल में डाल कर यह विचार पैदा कर देता है कि इस छोटी सी बुराई से क्या फर्क पड़ता है। यह कौन सा बड़ा गुनाह है। फिर यह छोटे गुनाह बड़े गुनाहों की तहरीक का साधन बन जाती हैं।

शैतान झूठ, ज़ुल्म, भावनाओं, ख़ून, तूल अमल दिखावा और अहंकार की तरफ बुलाता है.... इंसान तौबा करे, अल्लाह तआला मग़फ़रत चाहे तो बख़्शा जाता है और यह उम्मीद पैदा होती है कि अल्लाह तआला माफ कर देगा लेकिन शैतान ने अहंकार किया और वह मलऊन हुआ।

अहंकार को कई बार इंसान महसूस नहीं करता इसलिए बड़ी बारीकी से इस बारे में हमें अपनी समीक्षा लेनी चाहिए। कई बार शैतान नेकियों के ख़याल दिल में डाल कर भी अपने पीछे चलाता है।

कुछ लोग ज़ाहिर में बहुत नेक मालूम होते हैं और आदमी आश्चर्य करता है कि उस पर कोई तकलीफ क्यों आई या किसी अच्छाई के अधिग्रहण से क्यों वंचित रहा लेकिन दरअसल यह छुपे हुए गुनाह होते हैं जिन्होंने इस की हालत यहां तक पहुंचाई हुई होती है।

प्रत्येक आदमी किसी न किसी बुराई का माद्दा होता है। वह शैतान होता है जब तक कि कत्ल न करे काम नहीं बन सकता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के हवाले से शैतान और उस के हमलों और शंकाओं से बचने के मार्गों की तरफ मार्गदर्शन

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 11 मार्च 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْـهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْـدَهٗ لَا شَـرِيكَ لَهٗ وَأَشْـهَدُ أَنَّ مُحَمَّـدًا عَبْـدُهٗ وَ رَسُـوْلُهٗ۔ أَمَّـا بَعْـدُ فَأَعُـوْذُ بِـاللّٰهِ مِـنَ الشَّـيْطٰنِ الرَّجِيْـمِ۔ بِسْـمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ ۔ اَلْحَمْـدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِـيْنَ۔ اَلرَّحْمٰـنِ الرَّحِيْـمِ ۔ مٰلِـكِ يَـوْمِ الدِّيْـنِ ۔اِيَّـا كَ نَعْبُـدُ وَ اِيَّـاكَ نَسْـتَعِيْنُ۔ اِهْدِنـاَ الصِّـرَاطَ الْمُسْـتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْـنَ اَنْعَمْـتَ عَلَيْـهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُـوْبِ عَلَيْـهِمْ وَلَاالضَّآلِّـيْنَ ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾

(सूरत:अन्नूर :22)

इस आयत का अनुवाद है कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो शैतान के नक्शे क़दम पर मत चलो। और जो कोई शैतान के नक्शे कदम पर चलता है तो वह तो वास्तव में बे-हयाई (निर्लज्जता) और अवांछित बातों का आदेश देता है और अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और रहम तुम पर न हो तो तुम में से कोई एक भी कभी पवित्र न हो सकता लेकिन अल्लाह तआला जिसे चाहता है पवित्र कर देता है और अल्लाह तआला सुनने वाला चिरस्थायी ज्ञान रखने वाला है।

शैतान इंसान का अनादि काल से दुश्मन है और हमेशा रहेगा। यह इसलिए नहीं कि हमेशा रहने की कोई ताकत है बल्कि इसलिए कि इंसान के पैदा होने पर अल्लाह तआला ने उसे यह अधिकार दिया था कि वह आज़ाद है क्योंकि अल्लाह तआला जानता था कि उसके बन्दे शैतान के हमले से सुरक्षित रहेंगे। शैतान की यह दुश्मनी कोई खुली दुश्मनी नहीं है कि सामने आकर लड़ रहा है बल्कि वह विभिन्न तरीकों तथा बहानों से धोखे तथा छल से सांसारिक लालचों के माध्यम से आदमी के अहंकारों को उभारते हुए इंसानों को नेकियों से दूर ले जाता है और बुराइयों के समीप करता है। शैतान ने ख़ुदा तआला को कहा था कि जिस प्रकृति के साथ तूने आदमी को बनाया है जिस तरह इस की यह प्रकृति है कि दोनों ओर मुड़ सकता है तो इस को मैं अपने पीछे चलाऊंगा क्योंकि बुराइयों की तरफ इसका ज्यादा रुख होगा। अगर तू मुझे इजाज़त दें तो मैं इस पर हर रास्ते से हमला करूँगा। प्रत्येक रास्ते से इसे बहकाऊंगा और सिवाय वह जो तेरे वास्तविक बन्दे हैं, शुद्ध बन्दे हैं तो वे मेरे हमले से बचेंगे उन पर तो मेरी कोई चाल, कोई हमला कारगर नहीं होगा। इसके अलावा बहुमत मेरे कदमों पर चलेगी। अल्लाह तआला ने उसे इजाज़त दे दी और साथ यह भी कह दिया कि जो तेरे पीछे चलने वाले होंगे उन्हें जहन्नम में डालूंगा

लेकिन साथ ही अल्लाह तआला ने अपने नबियों को भेजने के निज़ाम को जारी करके आदमी को नेकियों के रास्ते भी बताए। उन्हें सुधार के तरीके भी बताए। उन्हें अपनी दुनिया और आख़िरत संवारने के माध्यम भी बताए। यह भी स्पष्ट किया कि शैतान तुम्हारा खुला-खुला दुश्मन है। वह सहानुभूति के लिबास में तुम्हारी बेहतरी और लाभ नहीं बल्कि बुराई और नुकसान की तरफ बुला रहा है और जब समय आएगा कि इंसान का हिसाब किताब हो तो बड़े आराम से बड़ी बेशर्मी से कह देगा कि मैंने तुम्हें बुराई की तरफ, लालच की तरफ, गुनाहों के करने की तरफ, अल्लाह तआला की आज्ञाओं के ख़िलाफ चलने की तरफ, बुलाया था लेकिन तुम तो अक्ल रखने वाले इंसान थे। तुम ने क्यों अपनी अक्ल का प्रयोग नहीं किया। क्यों मेरी बुराइयों की आवाज़ को ख़ुदा तआला की भलाई और अच्छाई की आवाज़ पर प्राथमिकता दी। इसलिए अब अपने किए की सज़ा भुगतो। मेरा अब तुम से कोई संबंध नहीं। मेरा लक्ष्य तुम्हारे से दुश्मनी करना था वह मैंने कर ली। अब जहन्नम की आग में जलो। इसलिए इस तरह शैतान आदमी से दुश्मनी करता है।

क़ुरआन में भी कई जगह अल्लाह तआला ने हमें शैतान के हमलों और उसके बहानों और चालाकियों से सावधान किया है। इस आयत में भी जो मैंने तिलावत की है। अल्लाह तआला ने यही बताया है कि शैतान हमेशा आदमी के पीछे पड़ा रहता है। उसने जब ख़ुदा को कहा कि उसके दाएं बाएं आगे पीछे से हमला करूंगा तो उसने बड़ी स्थिरता से ये हमले करने थे और करता है यहां तक कि शैतान भी कहता है कि मैं सीधे रास्ते पर बैठकर आदमी पर हमला करूँगा। अब एक आदमी समझता है कि मैं सीधे रास्ते पर चल रहा हूँ तो मैं शैतान के हमले से बच गया लेकिन यह विचार ऐसे आदमी की ग़लत फहमी है। जिन पर अल्लाह तआला का क्रोध हुआ जो ज़ाल्लीन बने वह भी तो पहले सीधे पथ पर चलने वाले थे। वे भी तो हज़रत मूसा को मानने वाले थे। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मानने वाले थे लेकिन गुमराही और शिर्क में पड़ गए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इनकार

करने वाले बन गए। तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि इंसान जब ईमान ले आता है तब भी शैतान उसका पीछा नहीं छोड़ता और उसे गुमराह करता है और कई लोग इस धोखे में आ कर, शैतान की बातों में आकर गुमराह हो जाते हैं। यहां तक कि मुसलमान कहलाने वाले भी मुर्तद और फासिक (अनैतिक) हो जाते हैं। इसलिए यह बहुत बड़ा खतरा है जो यह शैतान का खतरा है। यह अल्लाह तआला का विशेष फ़ज़्ल ही है जो आदमी को इस बड़े खतरे से बचा सकता है और बचाता है।

अल्लाह तआला इस आयत के आख़िर में मोमिनों को इस शब्द के साथ तसल्ली दी कि अल्लाह "समीइ" है। अल्लाह तआला सुनने वाला है। अत: उसके दरवाज़े को खटखटाओ और उसे पुकारो और स्थिरता से उसे पुकारो। उसके सामने स्थायी रूप से दुआएं करते हुए झुके रहो तो वह ख़ुदा "अलीम"(जानने वाला) भी है अपने बन्दों के हालात को जानता है, जब वह देखेगा कि मेरा बन्दा वास्तव में शुद्ध होकर मुझे पुकार रहा है तो फिर ख़ुदा ऐसे मोमिन के दिल में ऐसी ईमानी ताकत पैदा कर देगा जिससे वह शैतान के हमले से सुरक्षित हो जाएगा। नेकियों की गुणवत्ता बढ़ाने की तौफीक मिल जाएगी और बुराइयों से बचने की उस में ताकत पैदा हो जाए।

अत: जब शैतान ने कहा था कि तेरे शुद्ध बन्दों के अलावा सब मेरे पीछे चलेंगे तो एक अक्ल रखने वाले इंसान को सोचने की ज़रूरत है। एक असली मोमिन को सोचने की जरूरत है कि शुद्ध बन्दे कैसे बनें। शुद्ध बन्दे बनने के लिए इस आयत में अल्लाह तआला ने एक नुस्खा बताया कि "फहशाय" और "मुनकर" से बचेगा। जो ख़ुदा तआला को नापसन्द है। और जो फहशाय और मुनकर से बचेगा अल्लाह तआला की रहमत उसको पवित्र करेगी और जिसको अल्लाह तआला पवित्र कर दे वह पवित्र हो जाता है और ऐसे पवित्रों के पास फिर शैतान नहीं आता।

यह बात भी हमें याद रखनी चाहिए कि शैतान का हमला एक दम नहीं होता। वह धीरे-धीरे हमला करता है। कोई छोटी सी बुराई इंसान के दिल में डाल कर यह विचार पैदा कर देता है कि इस छोटी सी बुराई से क्या फर्क पड़ता है। यह कौन सा बड़ा गुनाह है। फिर यह छोटे- छोटे गुनाह बड़े गुनाहों की तहरीक का साधन बन जाती हैं। ज़रूरी नहीं कि डाका और क़त्ल ही बड़े गुनाह हैं। कोई भी बुराई जब समाज की शांति भंग तथा बर्बाद करे वह बड़ी बुराई बन जाती है। आदमी का यह अहसास मिट जाता है कि वह क्या कर रहा है। तो अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर पवित्र होना है यदि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करनी है तो जहां स्थिरता से बुराइयों से बचने की कोशिश करते हुए शैतान के नक्शे कदम पर चलने से बचना है वहां स्थिरता से अल्लाह तआला की शरण में आकर पवित्र होने की कोशिश करना भी आवश्यक है और वह स्थायी रूप से हर पल अल्लाह तआला को पुकारना और सहायता मांगना भी आवश्यक है इसके बिना आदमी शैतान के हमलों से बच नहीं सकता।

अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण पेश करूँगा कुछ लोगों के दिल में सवाल उठता है कि अल्लाह तआला ने शैतान को बनाया क्यों।? पहले ही दिन उसकी बेबाकी से सज़ा देकर उसे खत्म क्यों नहीं कर दिया। अगर पहले ही दिन शैतान को ख़त्म कर दिया जाता तो दुनिया में फसाद ही नहीं होते। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ। इस सवाल के जवाब में कि ख़ुदा ने शैतान को क्यों बनाया उसे सज़ा क्यों नहीं दी? आपने एक जगह फ़रमाया कि इस का जवाब यह है कि

"यह बात हर एक को माननी पड़ती है कि प्रत्येक आदमी के लिए दो जाज़िब हैं।" (यानी खींचने वाली दो चीज़ें हैं।) "एक ख़ैर का जाज़िब है जो नेकी की तरफ उसे खींचता है। दूसरा बुराई का जाज़िब है जो बुराई की तरफ खींचता है। जैसा कि यह बात स्पष्ट है और हर कोई अनुभव करता है कि कभी-कभी इंसान के दिल में बुराई के विचार पड़ते हैं और उस समय वह ऐसा बुराई की तरफ आकर्षित होता है कि मानो इस को कोई बुराई की तरफ खींच रहा है और फिर कई बार नेकी के विचार उसके दिल में पड़ते हैं और उस समय वह ऐसा अच्छाई की ओर आकर्षित होता है कि मानो कोई उसे अच्छाई की तरफ खींच रहा है और कभी-कभी एक आदमी बुराई करके फिर अच्छाई की ओर अकर्षित होता है और बहुत शर्मिन्दा होता है कि मैंने बुरा काम किया है और कभी ऐसा होता है कि एक आदमी किसी को गालियां देता और मारता है और फिर पछतावा होता है और दिल में कहता है कि यह काम मैंने बहुत ही अनुचित किया और उस से कोई नेक सलूक करता है या माफी मांगता है" (बुराई का उसे एहसास होता है तो फरमाया) "अत: ये दोनों प्रकार की शक्तियां प्रत्येक आदमी में पाई जाती हैं." (आदमी की फितरत है जो अल्लाह तआला ने बनाई है) "और शरीयत इस्लाम ने नेकी की ताकत का नाम "लम्मह मलिक" रखा है और बुराई की शक्ति का.... "लम्मह शैतान" नाम रखा है।" आप फरमाते हैं कि "दार्शनिक लोग तो केवल इस हद तक ही मानते हैं कि ये दोनों शक्तियां प्रत्येक आदमी में जरूर मौजूद हैं।" (यानी बुराई की ताकत और अच्छाई की ताकत लेकिन शरीयत इस्लाम ने जो अच्छाई की ताकत है उसे "लम्मह मलिक" का नाम दिया है और बुराई की शक्ति को "लम्मह शैतान" का) आप फरमाते हैं कि "दार्शनिक लोग तो केवल इस हद तक ही मानते हैं कि ये दोनों शक्तियां प्रत्येक आदमी में ज़रूर मौजूद हैं मगर ख़ुदा जो छुपे हुए राज़ प्रकट करता है (बहुत दूर के बहुत छुपे हुए भेद भी बताता है) और गहरी और छुपी हुई बातों की भी ख़बर देता है उस ने इन दोनों ताकतों को सृष्टि घोषित किया है। जो नेकी की तहरीक करता है उसका नाम फरिशता और रूहुल कुदुस रखा है और जो बुराई की तहरीक करता उसका नाम शैतान और इब्लीस करार दिया।" फरमाते हैं कि "मगर प्राचीन अक्ल मनदों और फलासफरों ने मान लिया है कि इल्का (किसी विचार का दिल में आना)का मस्ला बेहूदा और व्यर्थ नहीं है।"

यानी यह मस्ला जो है बेहूदा और यह मानते हैं कि यह एक सही चीज़ है कि इंसान के दिल में बुराई की शक्ति भी पैदा होती है या तहरीक होती है और अच्छाई की तहरीक भी पैदा होती है। इस को आप ने फिर उस तरह परिभाषित फरमाया है जैसे कि

"ये दोनों शक्तियां जो प्रत्येक आदमी में मौजूद हैं, चाहे तुम उन्हें या दोनों ताकतें कहो और या रूहुल कुदुस और शैतान नाम रखो मगर बहरहाल तुम इन दो हालतों के अस्तित्व से इनकार नहीं कर सकते और उनके पैदा करने से उद्‌देश्य यह है कि ताकि इंसान अपने नेक कामों से इनाम पाने का हकदार ठहर सके। क्योंकि यदि आदमी की प्रकृति ऐसी होती कि वे बहरहाल नेक काम करने के लिए मजबूर होता और बुरे काम करने से कुदरती तौर पर ना पसन्द करता होता तो इस हालत में भलाई का एक कण भी उसे सवाब न होता, क्योंकि वह उस की तबीयत(प्रकृति) का गुण होता। लेकिन इस हालत में कि उस की फितरत दो अकर्षणों के बीच में है और वह नेकी के आकर्षण का पालन करता है उस को इस काम का इनाम मिल जाता है।"

फरमाया कि "वास्तव में आदमी के दिल में दो किस्म के इलकाय (तहरीक) होती हैं। नेकी की तहरीक और बुराई की तहरीक। अब जाहिर है कि ये दोनों इलकाय (तहरीकें) इंसान के जन्म का घटक नहीं हो सकते।" (यानी जन्म के समय उनका हिस्सा नहीं थी) "क्योंकि वे परस्पर विरोधी हैं।" (आपस में मतभेद रखते हैं बुराई और अच्छाई का आपस में मतभेद है यह नहीं हो सकता बचपन से ही बच्चे की प्रकृति में ही भलाई और बुराई मौजूद है) फरमाया यह परस्पर विरोधी हैं और "साथ ही इंसान इन पर अधिकार नहीं रखता। इसलिए साबित होता है कि यह दोनों तहरीकें बाहर से आती हैं।" (नेकी का प्रभाव भी, बुराई का असर भी बाहर से आदमी लेता है। बच्चा जो धीरे धीरे नेकियों में बढ़ता है या बुराइयों में बढ़ता है जो भी इन्सान इस का असर बाहर से हो रहा होता है) फरमाया "और आदमी का पूर्ण होना इन पर निर्भर है। और अजीब बात यह है कि इन दोनों प्रकार के वुजूद यानी फरिश्ता और शैतान को हिन्दुओं की किताबें भी मानती हैं और गबर भी इसको मानते हैं (यानी वे लोग जो आग की पूजा करते हैं वे लोग भी इनको स्वीकार करते हैं।) "बल्कि जितनी ख़ुदा की तरफ से दुनिया में किताबें आई हैं सभी में इन दोनों वजूदों को स्वीकार किया है। फिर विरोध करना मात्र अज्ञानता और पूर्वाग्रह है। और जवाब में इतना लिखना भी ज़रूरी है कि जो आदमी बुराई और दुष्टता से रुकता नहीं वह ख़ुद शैतान बन जाता है जैसा कि एक जगह ख़ुदा ने फरमाया है कि आदमी भी शैतान बन जाते हैं और यह कि ख़ुदा उन्हें क्यों सज़ा नहीं देता। अब सवाल यह उठता है कि जब बन गया तो ऐसे लोगों को सज़ा क्यों नहीं देता) "इस का जवाब यही है कि शैतान को सज़ा देने के लिए कुरआन शरीफ में वादा का दिन निर्धारित है तो इस वादे के दिन का इंतजार करना चाहिए।" (अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैं सज़ा दूंगा ज़रूर दूंगा। कब ? इस दुनिया में या अगले जहान में जो भी दिन निर्धारित है इस दिन इस को सज़ा मिल जाएगी) "कई शैतान ख़ुदा के हाथ से सज़ा पा चुके और कई पाएंगे।"

(चश्मा मअरफत रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 293-294)

फिर इस बात का बयान फरमाते हुए कि कौन सी चीज़ें हैं जिनकी तरफ शैतान बुलाता है। कौन आदमी शैतान के कदमों पर चलने वाले हैं और कौन सी चीज़ें हैं जिन्हें हासिल करके आदमी शैतान के नक्शे कदम पर चलने से बचता है। इस बारे

में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"शैतान झूठ, ज़ुल्म, भावनाओं, ख़ून, आशाओं को सुन्दर करके, दिखावा और अहंकार की तरफ बुलाता है और दावत करता है" (अहंकार की तरफ बुलाता है और दावत करता है यानी कि बड़े चाव से बड़े प्यार से बुलाता है। तुम्हें दावत देता है कि आओ बुराइयों की ओर।) "उस के मुकाबला में अख़लाके फाज़िला और नैतिकता, धैर्य, अल्लाह तआला में फना हो जाना , ईमानदारी, विश्वास, कल्याण यह अल्लाह तआला की दावतें हैं।" (एक तरफ शैतान दावत दे रहा है दूसरी ओर अल्लाह तआला दावत दे रहा है इन नेकिया की दावत दे रहा है।) "इंसान दोनों धुरियों में पड़ा हुआ है।" (यानी दोनों तरह की कशिशें हैं, खींचने वाली चीज़ें हैं, इन दोनों में पड़ा हुआ है।) "फिर जिसकी फितरत नेक है और नेकी का माद्दा उसमें रखा है वह शैतान की हज़ारों दावतों और भावनाओं के होते हुए भी इस नेक फितरत और नेकी की बरकत से अल्लाह तआला की तरफ दौड़ता है।" (यानी जिस तरह इच्छा हो बुलाए तो फिर जिस में अल्लाह तआला नेकी का माद्दा रखा है वह अपनी नेकी की प्रकृति और उसकी बरकत से क्योंकि वह अल्लाह तआला की ओर झुकता भी है जब आदमी ऐसी फितरत (प्रकृति) रखने वाला हो तो अल्लाह तआला उसे फिर इतनी ताकत देता है कि वह अल्लाह तआला की ओर दौड़ता है बजाय शैतान की तरफ दौड़ने के।) "और ख़ुदा ही में अपनी राहत आराम और संतुष्टि को पाता है।"

फिर आप ने फरमाया कि

"हर चीज़ के लिए निशान ज़रूर होते हैं जब तक वे निशान नहीं पाए जाएं वे विश्वसनीय नहीं हो सकती। देखो दवाओं को वैद्य पहचान लेता है। बनफशा, ख़यार शनबर, तरबुद में अगर वे गुण नहीं पाए जाएं (यह सब ऐसे फल हैं या बूटियां हैं जिन से दवाएं बनती हैं फरमाया कि) "अगर वह गुण उनमें नहीं पाई जाएं जो एक बड़े अनुभव के बाद उन में प्रमाणित हुए हैं। (साबित हुए हैं यह गुण उन में पाए जाते हैं कि उन से कुछ बीमारियों को ठीक करते हैं अगर पता लग जाए कि यह गुण नहीं) तो डाक्टर उन्हें रद्दी की तरह फेंक देता है। इसी तरह ईमान के निशान हैं। अल्लाह तआला ने इनका बार-बार अपनी किताब में ज़िक्र किया है। यह सच्ची बात है कि जब ईमान इंसान के अंदर दाख़िल हो जाता है तो इसके साथ ही अल्लाह तआला की महानता यानी महिमा पवित्रता, किबरयाई, कुदरत और सब से बढ़ कर ला इलाहा इल्लल्लाह का वास्तविक अर्थ दाख़िल हो जाता है। यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसके अंदर निवास धारण करता है और शैतानी जिन्दगी पर एक मौत वारिद हो जाती है और गुनाह की फितरत मर जाती है" (यह फितरत का वह सौभाग्य है कि अगर सही ईमान है तो फिर गुनाह की फितरत मर जाती है।) "इस समय एक नई ज़िन्दगी शुरू होती है और वह रूहानी ज़िन्दगी है या यह कहना कि आसमानी जन्म का पहला दिन वह होता है। जब शैतानी ज़िन्दगी पर मौत वारिद होती है और रूहानी ज़िन्दगी की पैदायश होती है

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 169 प्रकाशन 1985 यू.के)

तो यही वह समय होता है जब इंसान फिर ख़ुदा तआला का होता है।

फिर अंहकार और शैतान के संबंध का वर्णन कहते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद फरमाते हैं कि

"सबसे पहले आदम ने भी गुनाह किया था। (धर्म की तारीख़ में आदम के गुनाह का ज़िक्र मिलता है।) और शैतान ने भी। (किया था। गुनाह दो थे। एक आदम ने किया एक शैतान ने) मगर आदम में अंहकार नहीं था इसलिए ख़ुदा तआला के सम्मुख अपने गुनाह को स्वीकार किया और उसका गुनाह माफ किया गया। इसी से आदमी के लिए तौबा के साथ गुनाहों के बख्शे जाने की उम्मीद है।" (अहंकार न हो, गुनाहों को स्वीकार किया हो, इंसान तौबा करे। अल्लाह तआला से माफी चाहे तो बख्शा जाता है और यह आशा पैदा होती है कि अल्लाह तआला बख्श देगा) "लेकिन शैतान ने अहंकार किया और वह लानती (शापित) हुआ। जो चीज़ कि इंसान में नहीं" (इतनी ताकत ही नहीं) आप फरमाते हैं "आहंकारी आदमी जान बूझ कर अपने लिए इस बात के दावे के लिए तैयार हो जाता है।" (इतनी ताकत ही नहीं तुम्हें कि तुम अहंकार करो। कहां तक जा सकते हो। कितने ऊंचे हो सकते हो। जब यह ताकत ही इतनी नहीं कि हर कुछ हासिल करो फिर अहंकार कैसा। फरमाया कि अहंकारी आदमी जानबूझ कर अपने लिए इस बात के दावे के लिए तैयार हो जाता है जो उसके पास है ही नहीं।) "नबियों में बहुत से हुनर होते हैं उनमें से एक हुनर अपने अहंकार को मारने का भी होता है" (कि अपनी अहं को समाप्त कर लेते हैं।) "उन में अहंकार नहीं रहता वह अपने नफ्स पर एक मौत वारिद कर लेते हैं। गर्व ख़ुदा के लिए है। जो लोग अहंकार नहीं करते और विनम्रता से काम लेते हैं वे नष्ट नहीं होते।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 281 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए अहंकार से बचो। यह वह गुण है जो एक मोमिन को धारण करना चाहिए वरना वह शैतान के नक्शे कदम पर चलने वाला है। अहंकार को कई बार इंसान महसूस नहीं करता इसलिए बड़ी बारीकी से इस बारे में हमें अपनी समीक्षा करनी चाहिए।

शैतान किस-किस तरह इंसान को अपने काबू में करने के तरीके करता है इस बारे में एक जगह बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि गुनाह वाला कोई काम आदमी न करे। फरमाया कि

"अगर आदमी के कामों से गुनाह दूर हो जाए"(यानी कोई काम ऐसा न करे जो गुनाह वाला है कोई उसका काम ऐसा न हो जो कहा जाए कि यह गुनाह है) तो शैतान चाहता है (क्या चाहता है शैतान) कि आंख कान नाक तक ही रहे।" (अगर ऊपरी तौर पर कोई काम गुनाह करने वाला न हो तब भी शैतान की यह इच्छा होती है कि इंसान की आंख में बैठा रहे कान में बैठा रहे नाक में बैठे रहे।) फरमाया कि "जब वहां भी उसे काबू नहीं मिलता तो वह भी कोशिश करता है कि और नहीं तो दिल में ही गुनाह (बैठा) रहे।" (बाहरी गुनाह कई लोग नहीं करते बड़े गुनाह नहीं करते या छोटे गुनाह नहीं करते। कइयों को मौका ही नहीं मिलता या ऐसी वजह नहीं बनती कि गुनाह करे या किसी डर से नहीं करते। ऊपरी तौर पर व्यावहारिक रूप से कोई गुनाह नहीं लेकिन शैतान फिर भी यह कोशिश करता रहता है तो यदि अल्लाह तआला से संबंध नहीं है कि किसी न किसी माध्यम से उसके अंदर गुनाह का बीज रखे और उसके दिल में बैठ जाए) फरमाया कि "मानो शैतान अपनी लड़ाई को अंत तक पहुंचाता है मगर जिस दिल में ख़ुदा का डर है वहाँ शैतान की हुकूमत नहीं चल सकती।"(अगर ख़ुदा का ख़ौफ दिल में हो तो सवाल ही नहीं पैदा होता कि गुनाह का बीज भी शैतान रख सके।) फरमाया कि "शैतान आख़िर उससे निराश हो जाता है और अलग होता है और अपनी बड़ाई में विफल और नामुराद होकर उसे अपना बोरिया बिस्तर बांधना पड़ता है।" (फिर बेचारा वहां से चला जाता है।)

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 401-402 प्रकाशन 1985 यू.के)

तो असली बात यही है कि ख़ुदा का ख़ौफ आदमी के दिल में रहे। ख़ुदा का भय होगा तो फिर बहुत सारी बुराइयों से आदमी बचता है। एक चोर भी चोरी करता है। अगर यह पता लग जाए कि उसे कोई बच्चा भी देख रहा है तो उसे उस बच्चे का डर होता है। इसलिए जब तक यह हमारे दिलों में नहीं होगा कि हम कोई भी पालन करते हुए या हर समय यह ध्यान रखें कि ख़ुदा हमारे हर काम को देख रहा है तो तब तक आदमी गुनाह से नहीं बच सकता।

कई बार शैतान नेकियों के विचार डाल कर भी अपने पीछे चलाता है। एक बार एक मज्लिस में इलहामों और हदीस नफस (मन के विचार) में भेद के बारे में उल्लेख था। इलहामों के बारे में यह वर्णन था कि था कि इसमें बहुत सी कठिनाइयां पड़ती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि "कई लोग हदीस नफस और शैतान के इलका (तहरीक) को इलाही इल्हाम से भेद नहीं कर सकते।" (नफस की बातें होती हैं। शैतान का इलका होता है। समझते हैं कि इलाही इल्हाम है) "और धोखा खा जाते हैं। ख़ुद की तरफ से जो बात आती है वे शौकत और आन्नद रखती है दिल पर एक ठोकर मारने वाली होती है। वह ख़ुदा की उंगलियों से निकली हुई होती है। उसका हम वज़न कोई नहीं। वह फौलाद की तरह गिरने वाली होती है जैसा कि कुरआन शरीफ में आया है। إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا (अल्मुज़म्मिल 6)(यानी बेशक हम तुझ पर एक कलाम उतारेंगे जो बहुत भारी है। "सकील" के यही अर्थ हैं मगर शैतान और नफस का इलका ऐसा नहीं होता। "हदीस नफस" और शैतान मानो एक ही हैं। (नफस की बातें हैं और शैतान के इलका यह एक ही चीज़ है।) आदमी के साथ दो ताकतें हैं जो हमेशा लगी रही हैं एक फरिश्ता और दूसरा शैतान। मानो उसके पैरों में दो रस्से पड़े हैं फरिश्ता नेकी में प्रोत्साहन और मदद देता है जैसा कि कुरआन शरीफ में आया है।

أَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ (अल्मुजादिला :23) यानी अपना कलाम भेज कर उनकी मदद की और शैतान बुराई की तरफ तहरीक करता है जैसा कि कुरआन शरीफ में आया है। "युवस्वेसो" इन दोनों से इनकार नहीं किया जा सकता। अन्धकार और नूर हर दो साथ लगे हुए हैं। "ज्ञान न होने से वस्तु का न होना साबित नहीं हो सकता।" (यानी उनमें यह नहीं है कि अगर किसी बात का ज्ञान नहीं तो वह चीज़ ही नहीं है।) फरमाया कि "सिवाय इस संसार के अतिरिक्त और हज़ारों चमत्कार हैं।" (यह जो अल्लाह तआला का यह ब्रह्मांड है, एक अजूबा है इसके अलावा भी अल्लाह

तआला के हज़ारों चमत्कार हैं।

फरमाया कि قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ में शैतान की उनके शंकाओं का उल्लेख है कि वह लोगों के बीच इन दिनों डाल रहा है।(विशेष रूप पर यह दिन जो हैं, यह ज़माना जो है जो आधुनिक युग कहा जाता है जिस में अल्लाह तआला को इंसान भूल रहा है, वह शैतान ही दिलों में शंकाए डाल रहा है।) फरमाया कि "बड़ी शंका यह है कि रबूबियत के बारे में ग़लतियां डाली जाएं जैसा कि अमीर लोगों के पास बहुत धन देखकर इंसान कहे कि यही पालन पोषण करने वाले हैं।"(यही मेरा सब कुछ हैं।)

फिर इस बात को समझाते हुए कि शैतान कैसे शंकाएं डालता है। एक तो पहले उदाहरण दे दी और फिर इस शंका से कैसे बचना है कि अमीर लोग हमारे लोग हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले हैं या अल्लाह तआला के अलावा कोई हस्ती भी है जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है।

आप फरमाते हैं कि "इसलिए वास्तविक रब्बुन्नास की पनाह चाहने के लिए फरमाया।" (इसलिए अल्लाह तआला ने फरमाया कि यह दुआ करो कि मैं वास्तविक रब्बुन्नास जो है उसकी शरण में रहूं।) "फिर सांसारिक बादशाहों और हाकिमों को आदमी स्वतंत्र निरपेक्ष कहने लग जाता है। इस पर फरमाया कि "मलेकिन्नास।" अल्लाह ही है। फिर लोगों की शंकाओं का नतीजा यह होता है कि सृष्टि को ख़ुदा के बराबर मानने लग पड़ते हैं और उनसे डर और उम्मीद रखते हैं। इसलिए "इलाहिन्नास" फरमाया। (तुम्हारा माबूद (उपास्य) अल्लाह तआला ही है।) यह तीन शंकाए हैं उन्हें दूर करने के लिए यह तीन तावीज़ हैं (जो सूरह: नास में वर्णन किए गए हैं) और उनकी शंकाओं के डालने वाला वही खन्नास है। (यानी शैतान है।) जिसका नाम तौरात में हिब्रू भाषा में "नहाश" आया है जो हव्वा के पास आया था। छुप कर हमला करने वाला। इसी सूरत में इसी की चर्चा है। इससे मालूम हुआ कि दज्जाल भी ज़बरदस्ती नहीं करेगा बल्कि छिपकर हमला करेगा ताकि किसी को ख़बर न हो।" (यह दुनिया की जो चकाचौंध है आजकल जो नए-नए आविष्कार हैं या आजकल जो शिक्षा के बहाने से अल्लाह तआला से दूरी और धर्म से दूरी का ध्यान दिलाया जाता है और इस में सरकार सहित बड़े-बड़े संगठन भी शामिल हैं कि मानव अधिकार के नाम पर कुछ बातें की जाती हैं। यह देखो धर्म तुम्हें इन बातों का पाबन्द करता है हालांकि मानवाधिकार की मांग है कि आदमी को पूरी स्वतंत्रता हो। यह बातें धीरे-धीरे दिल में डाली जाती हैं और ये चीज़ें शैतान कर रहा है इस ज़माने में भी और इस में सरकार सहित बड़ी-बड़ी जो ह्यूमन राइट्स (Human Rights) के नाम पर या महिलाओं के राइट के नाम पर औरतों के अधिकार के नाम पर या जैसा कि पहले मैंने कहा मानवाधिकार के नाम पर जो संगठन हैं यह सब शामिल हैं। जहां वह धर्म से हटाने की कोशिश करें। वहाँ हर एक को समझ लेना चाहिए, हर अहमदी को समझ लेना चाहिए, हर मोमिन को समझ लेना चाहिए कि यहाँ शैतान का हमला हम पर होने वाला है और यह दज्जाली शक्तियां हैं जो हम पर हमला कर रही हैं।)

और फिर फरमाया कि "यह ग़लत है कि ख़ुद शैतान हव्वा के पास गया, बल्कि जैसा कि अब छुपकर आता है वैसे ही तब भी छुप कर गया था।" (कोई वजूद नहीं था कोई आदमी नहीं था जो हव्वा के पास गया था उसी तरह शंका डाले थे।) फरमाया "किसी आदमी के अंदर वह अपना ख्याल भर देता है और वह इसका कार्य वाहक हो जाता है। किसी ऐसे धर्म विरोधी के दिल में शैतान ने यह बात डाल दी थी और वह जन्नत जिस में हज़रत आदम रहते थे वह भी ज़मीन पर ही था। (कोई फिज़ा में नहीं थी।) किसी बुरे ने उनके दिल में शंका डाल दी।

कुरआन शरीफ की पहली ही सूरत में अल्लाह तआला ने ताकीद फरमाई है कि "मग़ज़ूब अलैहिम" और "ज़ाल्लीन" लोगों में से न बनना। यानी हे मुसलमानों तुम यहूदियों और ईसाइयों के गुणों को धारण न करना। इस में भी एक भविष्यवाणी निकलती है कि कुछ मुसलमान ऐसा करेंगे। अर्थात एक ज़माना आएगा कि इन में से कुछ यहूदी और ईसाइयों के गुणों को धारण करेंगे क्योंकि आदेश हमेशा ऐसी बात के बारे दिया जाता है जिस का उल्लंघन करने वाले कुछ लोग होते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 244-245 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर एक अवसर पर इस बात का वर्णन कहते हुए कि धर्म को हर हाल में दुनिया पर प्राथमिकता देनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "देखो दो प्रकार के लोग होते हैं। एक तो वे जो इस्लाम स्वीकार करके दुनिया के व्यापार और कारोबारों में व्यस्त हो जाते हैं। शैतान उनके सिर पर सवार हो जाता है। मेरा यह मतलब नहीं कि व्यापार करना मना है। नहीं। सहाबा भी व्यापार करते थे मगर वह धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देते थे। उन्होंने इस्लाम कबूल किया तो इस्लाम के बारे में सच्चा ज्ञान जो विश्वास से उनके दिल भर दे उन्होंने हासिल किया। यही वजह थी कि वह किसी क्षेत्र में शैतान के हमले से नहीं डगमगाए। कोई काम उन्हें सच्चाई की अभिव्यक्ति से नहीं रोक सका। मेरा मतलब केवल यह है कि जो केवल दुनिया ही के बन्दे और ग़ुलाम हो जाते हैं मानो दुनिया के पुजारी हो जाते हैं ऐसे लोगों पर शैतान अपना प्रभुत्व और काबू पा लेता है। दूसरे वे लोग होते हैं जो धर्म की तरक्की की चिंता में हो जाते हैं। यह वह गिरोह है जो "हिज़्बुल्लाह" कहलाता है और जो शैतान और उसकी फौज पर विजय पाता है। माल चूंकि व्यापार से बढ़ता है इसलिए ख़ुदा ने भी धर्म का मांगना और धर्म की तरक्की की इच्छा को एक व्यापार ही बताया है।" (यानी धर्म की मांग क्या है और इस में तरक्की भी एक व्यापार है। माल जो साधारण सांसारिक माल है। वह तो दुनिया में रह जाता है लेकिन यह माल यह व्यापार अगली ज़िन्दगी में काम आने वाली है) अत: फरमाया है कि يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ (अस्सफ : 11) (क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की खबर दूँ जो तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से बचा लेगी।) फरमाया कि "सबसे उत्कृष्ट कारोबार धर्म का है जो दर्द वाले अज़ाब से मुक्ति देता है। अपने जमाअत से फरमाया कि अत: मैं भी ख़ुदा तआला के इन्हीं शब्दों मैं तुम्हें कहता हूँ कि هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 193 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

इसलिए हमें ऐसा कारोबार करना चाहिए, उन रास्तों पर चलने की कोशिश करनी चाहिए जिनके द्वारा ज़माने के इमाम और अल्लाह तआला के फरिस्तादे और मसीह मौऊद और महदी मअहूद हमें बुला रहे हैं ताकि शैतान के नक्शे कदम पर चलने से हम बचें और अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करते हुए दर्दनाक अज़ाब से बचें।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि छुपे गुनाहों से बचो, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"जब कोई दु:खों में गिरफ्तार होता है तो दोष आख़िर में बन्दे का ही होता है।" (मुसीबतों में गिरफ्तार होने के बाद यह कहना कि अल्लाह तआला की तरफ से मुसीबत आ गई। नहीं। दोष बन्दे का होता है।)"ख़ुदा तआला का तो दोष नहीं है। कुछ लोग ज़ाहिर में तो बहुत नेक मालूम होते हैं और आदमी आश्चर्य करता है कि उस पर कोई तकलीफ क्यों आई या किसी नेकी के अधिग्रहण से क्यों वंचित रहा लेकिन दरअसल इस के छुपे हुए गुनाह होते हैं जिन्होंने उस की हालत यहां तक पहुंचाई हुई होती है। अल्लाह तआला चूंकि बहुत माफ करता है और क्षमा करता है इसलिए आदमी के छुपे गुनाहों का किसी को पता नहीं लगता, लेकिन छुपा गुनाह दरअसल ज़ाहिर के गुनाहों से बदतर होते हैं। गुनाहों का हाल भी बीमारियों की तरह है कुछ मोटी बीमारियां हैं।" (ज़ाहिर की बीमारी) प्रत्येक आदमी देख लेता है कि अमुक बीमार है मगर कुछ ऐसी छिपी बीमारियां हैं कि कभी-कभी मरीज़ को भी पता नहीं होता कि मुझे कोई ख़तरा हो रहा है। ऐसा ही तपेदिक है कि शुरुआत में इसका पता कई बार डाक्टर को भी नहीं लग सकता यहाँ तक कि बीमारी भयानक रूप धारण करती है।" (कई बार ऐसा होता है कि अंतिम स्टेज पर जाकर पता चलता है। कई बार कैंसर के मरीज़ हैं। अच्छा भला स्वस्थ आदमी ज़ाहिर में लग रहा है और एकदम पता लगता है कि कैंसर है और ऐसी हालत पर चला गया है जहां अब कोई इलाज नहीं। फैल चुका है और महीने के भीतर आदमी ख़त्म हो जाता है। इसलिए कहा कि जिस तरह बीमारी का पता नहीं लगता।) "ऐसा ही आदमी के आंतरिक गुनाह हैं जो धीरे-धीरे उसे मौत तक पहुंचा देते हैं। ख़ुदा तआला अपने फज़्ल से रहम करे। कुरआन शरीफ में आया है قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا (सूरह अशशमस 10) कि उसने मुक्ति पाई जिसने अपने नफ्स की शुद्धि की। लेकिन नफ्स की शुद्धि भी एक मौत है। जब तक कि सारी गन्दी आदतों को नहीं छोड़ा जाए। आत्म शुद्धि कहाँ प्राप्त हो सकती है।" (जितनी बेहूदा गंदी घटिया आदतें हैं जब तक उन्हें छोड़ नहीं दोगे जिन पर शैतान चलाना चाहता है। "फहशाय" और "मुनकर" पर चलाना चाहता है। "मुनकर" का मतलब ही यही है कि हर चीज़ जो अल्लाह तआला को नापसंद है। वह मुनकर है। जब तक सारी गन्दी आदतों को छोड़ा न जाए आत्म शुद्धि कहां मिल सकती है।) "प्रत्येक आदमी में किसी न किसी बुराई का माद्दा होता है। वह उस का शैतान होता है जब तक कि उसे कत्ल न करे काम नहीं बन सकता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 280-281 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

तो जैसा कि पहले भी उल्लेख किया है कि हमें हर समय अल्लाह तआला की पनाह की ज़रूरत है और अपनी समीक्षा लेते रहने की ज़रूरत है।

शैतान को मारने के लिए और कैसे हमें कदम उठाना चाहिए इस बारे में एक

जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"पैग़म्बर अल्लाह तआला के प्रतिनिधि और ख़ुदा तआला को दिखाने वाले होते हैं फिर सच्चा मुसलमान और आस्थावान वह होता है जो पैग़म्बरों का प्रतिनिधि बने। सहाबा ने इस राज़ को ख़ूब समझ लिया था और वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता में ऐसे गुम हुए और खोए गए कि उनके अस्तित्व में और कुछ बाकी रहा ही नहीं था। जो कोई उन्हें देखता था उन्हें फना के आलम में पाता था।"(अल्लाह तआला की नज़दीकी को पाने और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को अपनाने में डूबे हुए थे।) "तो याद रखो कि इस ज़माने में भी जब तक वह फना और वह आज्ञाकारिता में गुम होना पैदा न होगी जब तक वह फना और वह आज्ञाकारिता में गुम होना पैदा न होगी जो सहाबा में पैदा हुई थी, मुरीदों आस्थावानों में दाख़िल होने का दावा तब ही सच्चा और ठीक होगा। यह बात अच्छी तरह से अपने दिमाग़ में बिठा लो कि जब तक यह न हो कि अल्लाह तआला तुम में निवास करे और ख़ुदा तआला के निशान तुम में दिखाई दे तब तक शैतानी हुकूमत का दख़ल मौजूद है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 168-69 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अल्लाह तआला करे कि हम शुद्ध होकर अल्लाह तआला का बनने की कोशिश करो। सभी "फहशाय" और "मुनकर" से बचें। सभी प्रकार की बुराइयों से बचें। सभी प्रकार के अहंकार से बचें। अपने नफस की समीक्षा की कोशिश करते रहें ताकि अल्लाह तआला के फज़लों के वारिस बनें। हमेशा हमारी दृष्टि ख़ुदा तआला पर हो और वही हमारा रब्ब रहे। हमेशा उसी की मालकियत हमारे दिलों पर कब्ज़ा जमाए रखे। वही हमारा उपास्य रहे और हम हमेशा पुकारने वाले बने रहें और शैतान के क़दमों पर चलने से बचते रहें। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 8 का शेष

सच्चा समझ ले जो संसार में आए , चाहे हिन्द में प्रकट हुए या फारस में या चीन में या अन्य देश में तथा अल्लाह ने करोड़ों लोगो के दिलों में उनका आदर और सम्मान स्थापित कर दिया और उनके धर्म की जड़ स्थापित कर दी। और कई शताब्दियों तक चला आया।''

आप फरमाते हैं -

'' यही नियम कुरआन ने हमें सिखाया। इस नियम की दृष्टि से ही हम प्रत्येक धर्म के पेशवाओं या संस्थापकों को जिनकी जीवनियाँ इस परिभाषा के अन्तर्गत आ गई है हम उन्हें आदर की दृष्टि से देखते है चाहे वे हिन्दुओं के धर्म के पेशवा हों या फारसियो के या चीनियों या यहुदीयों के धर्म के या ईसाईयों के धर्म के।''

आज जमाअत अहमदिया शांति की स्थापना हेतु अपने रूहानी इमाम के आदेशानुसार दिन रात यथा सम्भव प्रयास कर रही है। इस सम्बन्ध में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब इमाम जमाअत अहमदिया अपनी आध्यत्मिक एवं ज्ञानात्मिक कुशलता से विश्व पर छाए हुए खतरों से बचने हेतु विश्व के प्रमुख लोगों अपने भाषण एवं पत्र के द्वारा शांति स्थापना हेतु उनकी जिम्मेदारियों की और उनका ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। आपने इस विषय में यूरोपियन पार्लिमेंट,ब्रिटिश पार्लिमेंट,डच पार्लियामेंट,कैपिटल हिल अमरीका जैसे बड़े सदनों में विश्व शांति पर उपदेश दिए हैं। यह सभीं चिट्ठिया इस पुस्तक में दर्ज है जो ये साबित करती है कि आज दुनिया की विस्फोटक स्थिति के विनाशकारी अंजाम से बचने के लिए अहमदिया मुस्लिम समुदाय अपनी पूरी ताकत के साथ विश्व शांति की स्थापना की प्रयास में अग्रसर है।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत एकमात्र ऐसी जमाअत है जिस में इस्लामिक नियम अनुसार ख़िलाफ़त का रूहानी निज़ाम स्थापित है जो विश्व शांति हेतु यथा सम्भव प्रयास व प्रयत्न कर रही है। विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लिफ़तुल मसीह-अल खामिस के आध्यात्मिक नेतृत्व में मुल्क की तरक्की,कल्याण हेतु निर्धन मनुष्यों की सहायता,गरीब बच्चों को शिक्षा प्राप्त हेतु सहयोग,मुफ्त चिकित्सक सहयोग,जैसे समाज सेवा कार्यों का आयोजन कर रही है पिछले वर्ष कश्मीर एवं तमिलनाडू में सेलाब के कारण हुई त्रासदी के समय में भी जमाअत ने हर प्रकार का सहयोग एवं सहायता की। अहमदिया जमाअत के दूसरे ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा बशीर उद्दीन अहमद ने क्या ख़ूब फरमाया है ....

मुझे बैर हरग़िज़ नहीं है किसी से
मैं दुनिया में सबका भला चाहता हूं।

☆ ☆ ☆

राष्ट्रीय भाषा हिंदी और पांच प्रान्तीय भाषाओं में अख़बार बदर का आरम्भ

दिनांक 14 मार्च 2016 ई को अहमदिया केन्द्रीय लायब्रेरी कादियान में राष्ट्रीय एव क्षेत्रीय अखबार बदर के आरम्भ का विशेष समारोह मौलाना महमद इनाम ग़ौरी साहब नाज़िर आला तथा अमीर जमाअत अहमदिया कादियान की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। मेहमान के रूप में आदरणीय मौलाना जलालुद्दीन साहब नैयर सदर सदर अंजुमन अहमदिया कादियान शरीक हुए। इसी तरह आदरणीय हाफिज़ मखदूम शरीफ साहब सदर अन्नूर इशाअत बोर्ड कादियान, नाज़िर साहिबान सदर अंजुमन अहमदिया, नाज़मीन और वकीलों के अलावा अफसर साहिबान और ऐडीटरान अखबार बदर भी तशरीफ़ लाए।

तिलावत कुरआन आदरणीय हाफिज़ सय्यद रसूल नियाज़ साहब ने की। बाद में आदरणीय कारी नवाब अहमद साहब मैनेजर बदर ने परिचयात्मक तकरीर करते हुए कहा कि आज बड़ी ख़ुशी का दिन है कि हम राष्ट्रीय भाषा हिंदी और पांच प्रांतीय भाषाओं उड़िया, बंग्ला, तमिल, तेलुगू मलयालम में अख़बार बदर जारी करने के विशेष समारोह में शामिल हो रहे हैं। अख़बार बदर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में जारी हुआ था और हुज़ूर ने इसे अपना बाज़ू करार दिया है। उसके द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश, इलहाम, शिक्षाऐं जल्द दोस्तों तक पहुंचाई जाती थीं। देश विभाजन के बाद अखबार बदर कठिन परिस्थितियों में फिर से जारी हुआ। शिक्षण एवं तरबियत तथा तबलीग़ की दृष्टि से बदर की सेवाएं स्पष्ट हैं। ख़लीफतुल मसीह के ख़ुत्बों, भाषणों, मज्लिसे इरफान उपदेशों को पहुंचाने के मामले में यह जमाअत का अकेला प्रतिनिधि है तथा भारत की जमाअतों और केंद्र के बीच एक संपर्क का साधन था। उर्दू भाषा में होने के कारण वे दोस्त जो उर्दू नहीं जानते इस संपर्क से वंचित थे और इससे लाभ नहीं पा रहे थे तो उसका हिंदी संस्करण सर्कूलर के रूप में जारी किया गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रहिल अज़ीज़ ने अख़बार बदर से लाभ का विस्तार और सामान्य करने के लिए हिंदी के अलावा भारत की पांच प्रांतीय भाषाओं उड़िया, बंग्ला, तमिल,तेलुगू, मलयालम में भी इसके प्रकाशन की स्वीकृति फ़रमाई। आधिकारिक तौर पर पंजीकरण की प्रक्रिया पूरी होने के बाद अब अल्लाह की कृपा से कादियान से यह समाचार पत्र प्रकाशित होना शुरू हो गए है। जिस का आज समारोह तारीख आयोजित की गई है।

बाद में सभापति जी ने मेहमान की सेवा में सभी क्षेत्रीय बदर का एक नुस्खा देते हुए उसका अनावरण किया।

इसके बाद आदरणीय सदर साहब अन्नूर प्रकाशन बोर्ड ने संक्षिप्त संबोधन किया।

अंत में आदरणीया नाज़िर साहब आला ने भी अखबार की आवश्यकता, महत्त्व बरकतों का ज़िक्र करते हुए कहा कि आज का दिन हमारे लिए ख़ुशी का दिन है और एक ऐतिहासिक दिन है कि बदर 7 भाषाओं में कादियान से प्रकाशित करने की अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी है। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम के प्रचार का हुक्म दिया था। आप ने इस काम को अकेले ही शुरू किया था और जो बीज आप ने बोए थे वह आज पूरी दुनिया में तनावर फलदार पेड़ बन चुके हैं।

आख़िर मैं आप ने फरमाया कि दोस्तों से अनुरोध है कि दुआ करें कि जिस उद्देश्य के लिए यह अख़बार शुरू हुए हैं हम इसको पूरा करने वाले हों और हुज़ूर अनवर की इच्छा के अनुसार लाभ उठाने वाले हों। आख़िर में सदर इजलास ने सामूहिक दुआ करवाई।

(क़ुरैशी मुहम्मद फजलुल्लाह, उप संपादक बदर कादियान)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 14 April 2016 Issue No. 6

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (+91) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

विश्व शान्ति की स्थापना में अहमदिया जमाअत का योगदान

मुहम्मद अब्दुल बाक़ी, बरहपुरा बिहार

(24 जनवरी 2016 ई को पटना बिहार में आयोजित पीस कान्फ्रेंस में की गई तकरीर। सम्पादक)

अब छोड़ दो जेहाद का ऐ दोस्तो ख्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग व किताल
(संस्थापक अहमदिया मुस्लिम समुदाय)

उपस्थित सज्जनो ! आज दुनिया अपनी तबाही के लिए स्वंय बनाए हुए बारूद के ढेर पर बैठी है और हर तरफ आंतक का माहौल बना हुआ है। दहशत और नफरत फैलाई जा रही है, इंसान कीड़े-मकौड़ो की तरह मारे जा रहे हैं। और यह सब कुछ दुनिया में धर्म और शांति स्थापित करने के नाम पर हो रहा है। अगर यह कहा जाए कि आज दुनिया तीसरे विश्व युद्ध के कगार पर खड़ी है तो यह ग़लत नहीं होगा।

उपस्थित सज्जनों ! आज हम सभी धर्मों के मानने वाले इस संगोष्ठी में इस विषय पर विचार के लिए इकट्ठा हुए हैं कि विश्व के वर्तमान विस्फोटक तनाव को दूर कर विश्व में शांति ,भाई चारा और मानवता किस प्रकार स्थापित की जा सकती है। इन महान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आज विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत सारे संसार में शान्ति स्थापना की कोशिश कर रही है। इस जमाअत की स्थापना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी ने आज से लगभग सवा सौ साल पहले 1889 ई0 में कादियान ज़िला गुरदासपुर पंजाब में की थी। जिस का उद्देश्य संसार में शान्ति की स्थापना करना है।

इस समय इस के पांचवे ख़लीफा तथा इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब स्वंय और उनकी हिदायतों के अनुसार अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लोग सारे संसार में Peace Symposium अर्थात शांति संगोष्ठी का आयोजन करते हैं। आज का यह आयोजन भी इसी कोशिश की एक कड़ी है।

प्रिय सज्जनो ! शांति की स्थापना में सभी प्रयासों के विफल होने का सबसे बड़ा कारण हर काम में लोगो का अपना स्वार्थ और दूसरों की भलाई की सोच का अभाव ही है, इस के अलावा और कुछ नहीं।

अहमदिया जमाअत के संस्थापक ने हमें बताया है कि आज सभी लोग बल्कि सभी धर्मों के अनुयायी अपने धर्मों (जिसका वे पालन करते है।) कि बुनयादी शिक्षा को भूल कर अपने प्यारे ख़ुदा से बहुत दूर हट गए हैं। जिसके कारण आज दुनिया में अशांति बेचैनी और एक दूसरे के प्रति नफरत फैल गई है और एक दूसरे के प्रति प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता, सद्भाव समाप्त होता जा रहा है। जिसकी दोबारा स्थापना हम सभी के संयुक्त प्रयास से ही हो सकती है। जिसके लिए हम सबों को बिना किसी भेदभाव के,अथक मेहनत,कुर्बानी एवं लगन और सच्चे दिल से एक दूसरे के लिए आदर का भाव उत्पन्न करने की आवश्यकता है,तभी विश्व को सच्ची शांति की प्राप्ति हो सकती है।

प्रिय सज्जनों ! दुनिया में इंसानों का खून हमेशा मज़हब या हुकुमत के नाम पर ही बहाया जाता रहा है। हुकूमत के नाम पर खून बहाए जाने की बात तो समझ में आती है लेकिन मज़हब के नाम पर ख़ून बहाए जाने की बात पर यकीन नहीं किया जा सकता , क्योंकि दुनिया के किसी भी सच्चे मज़हब के संस्थापक ,नबियों, अवतारों और गुरूओ ने अपने मानने वालों को किसी इंसान का खून बहाने या समाज में फितना व फसाद फैलाने और नफरत व घृणा फैलाने की तालीम नहीं दी है। इस संबंध में अहमदिया मुस्लिम समुदाय के वर्तमान पाँचवें इमाम ने 2010 ई के लंदन में हुए शांति संगोष्ठि में कुरआन मजीद की शिक्षा पेश करते हुए फरमाया था कि ''जो तुम अपने लिए पसन्द करते हो वह तुम अपने दूसरे भाइयों के लिए भी पसन्द करो।'' इस सुनहरे सिद्धांत के पालन से ही आज विश्व में शांति स्थापित हो सकती है।

प्रिय सज्जनो ! जैसा कि हम सभी लोग जानते हैं कि इस दुनिया के सभी लोगों को पैदा करने वाला ख़ुदा तआला एक है। उन में कोई हिन्दु धर्म को मानने वाले है, कोई इस्लाम धर्म को मानने वाले है, कोई ईसाई धर्म को मानने वाले है, कोई सिख धर्म को मानने वाले है कोई बौद्ध धर्म को मानने वाले है और इसी प्रकार कोई अन्य धर्मों को मानने वाले है। लेकिन इन सब का एक ही ख़ुदा ही संतान होने के नाते आपस में भाई-भाई होना सिद्ध होता है। दुनिया में जब तक इस विचार एवं हकीकत को बल देते हुए इसका प्रचार व प्रसार नहीं किया जाता, तब तक विश्व में वास्तविक शांति स्थापित नहीं हो सकती।

प्रिय सज्जनो ! विश्व शांति स्थापित करने का एक दूसरा सबसे बड़ा अच्छा और आसान तरीका यह है कि लोग एक ख़ुदा को मानें और उसके भेजे हुए सभी नबियों, अवतारों,गुरूओ की आदर और सम्मान करें। अहमदिया मुस्लिम जमाअत सभी धर्मों के नबियों, अवतारो एवं संस्थापकों का केवल आदर ही नहीं करती बल्कि उन्हें सच्चा भी मानती है क्योंकि हमारी धार्मिक पुस्तक कुरआन करीम में यह लिखा है कि ''वे सब अल्लाह पर,उसके फरिश्तों पर ,उसकी समस्त किताबों पर इमान लाए और उसके रसूलों में से किसी भी रसूल के बीच भेदभाव नहीं करो ''

(सुरह बकरा आयत 286)

पवित्र कुरआन के इस सुनहरे सिद्धांत को आज दुनिया में अपनाने की ज़रूरत है और इसी आधार पर अहमदिया जमाअत के तीसरे इमाम हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ने हमें यह शिक्षा दी कि "प्रेम सबसे घृणा किसी से भी नहीं" क्योंकि इसके बिना दुनिया में शान्ति स्थापित नहीं किया जा सकता और दुनिया में स्थायी अमन और शांति की गारन्टी नहीं दी जा सकती।

प्रिय सज्जनों ! आज के युग का यह दुर्भाग्य है कि कुछ लोग अपने धर्म के संस्थापकों,अवतारो को तो ख़ुदा तआला की तरफ से समझते है लेकिन अन्य धर्मो अथवा समुदायों के संस्थापकों अथवा नबियो, अवतारों को झूठा मानते है। आज कल विभिन्न धर्मों के धार्मिक गुरूओं या संस्थापकों का अनादर एवं अपमान करना एक सामान्य बात हो गई है। कभी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कार्टून बनाए जाते है और आपके विरूद्ध अपमान जनक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। कभी हिन्दू धर्म के देवी,देवताओं और गुरूओं के विरूद्ध और कभी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के विरूद्ध और कभी सिख धर्म के संस्थापक एवं गुरूओं के विरूद्ध अपमान जनक वाक्य या चित्र बना कर दुनिया के अमन और शांति के वातावरण को नष्ट करने का प्रयास किया जाता है। और ये सब साथ अभिव्यक्ति और लेखन की स्वतंत्रता के नाम पर यह एक साधारण बात बनती जा रही है।

हमारी धार्मिक किताब कुरआन मजीद में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि संसार में कोई जाति या क़ौम नहीं गुज़री कि उस मे अल्लाह की ओर से कोई सर्तक करने वाला रसूल या अवतार नहीं आया हो - (सूरह फातिर आयत 25)

और एक दूसरी जगह पर लिखा है कि मैंने सभी कौमों में हिदायत देने वाले भेजे (सूरह राअद - आयत 8)

प्रिय सज्जनो ! यही कारण है कि अहमदिया मुस्लिम समुदाय सभी धर्मों के नबियो, अवतारों संस्थापकों का केवल आदर ही नहीं करती बल्कि उन्हें सच्चा भी मानती है और अपने विभिन्न आयोजनों जैसे सर्व धर्म सम्मेलन,शांति संगोष्ठी इत्यादि में अनेको ऐसे नारे लिखे जाते है जिस में यह लिखा होता है , इंसानियत ज़िन्दाबाद, सर्व धर्म संस्थापक ज़िन्दाबाद, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ज़िन्दाबाद, श्री कृष्ण जी अलैहिस्सलाम ज़िन्दाबाद, श्री राम चंद्र जी अलैहिस्सलाम ज़िन्दाबाद ,श्री बाबा गुरू नानक जी महाराज ज़िन्दाबाद, हज़रत महात्मा बुद्ध ज़िन्दाबाद। इत्यादि।

प्रिय सज्जनो ! हम अहमदिया मुस्लिम समुदाय के लोग ऐसा ऐलान अथवा प्रदर्शन किसी धर्म विशेष या साधारण लोगों को ख़ुश करने अथवा दूसरो को धोखा देने की नीयत के लिए नहीं करते ,बल्कि हमारा यह व्यवहार कुरआन करीम की तालीम के अनुसार होता है और हमारा हकीकी धर्म इस्लाम है। हमारे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे रसूलों व नबियों के सरदार और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं।

इसके अतिरिक्त हमारा उक्त प्रदर्शन हमारे अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हजरत मिर्ज़ा गुलाम अहमद के उन कथनों के अनुसार होता है जो उन्होंने अपनी किताब "तोहफाए कैसरया" के पृष्ठ 7 पर लिखे हैं आप फरमाते हैं " ये नियम नितांत प्रिय और शांति दायक और (मैत्री) सुलह के नींव डालने वाला तथा नैतिक अवस्थाओ को सहयोग देने वाला है कि हम उन समस्त नबियों को

शेष पृष्ठ 7 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad